प्रज्ञा

@sameekshadebsoc234

sameekshadebsoc_19

समीक्षा

हिंदी वाद-विवाद समिति

2020-21

HINDI DEBATING SOCIETY

समीक्षा

GARGI COLLEGE

सोसाइटी यूनियन

2020-2021

शिक्षकगण

डॉ. पार्वती शर्मा(संयोजिका)

डॉ. मीना(सह-संयोजिका

सोसाइटी यूनियन

2020-2021

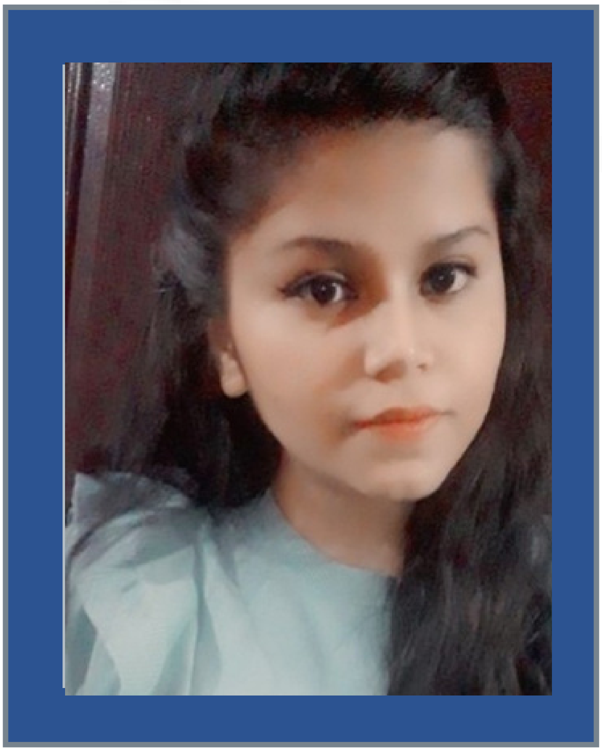

खुशबू(अध्यक्षा)

संजीवनी खन्ना(उपाध्यक्षा)

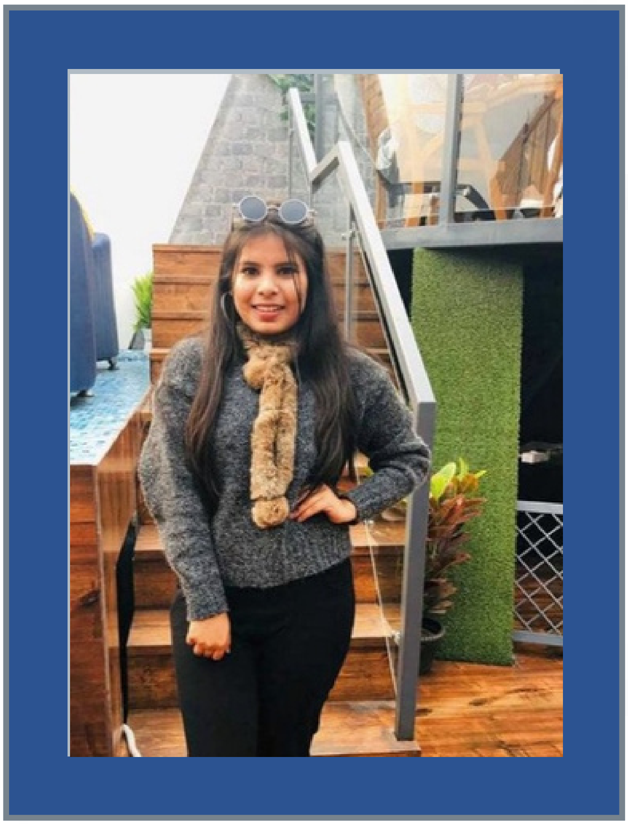

श्रेया शाह (कोषाध्यक्षा)

सहायक समूह

क्रिएटिव टीम

2020-2021

ईशा अग्रवाल

अनुभूति जैन

आलिया सैफी

अन्वेषा डे

प्रिया कुमारी

सहायक समूह

सोशल मीडिया टीम

2020-2021

सीता प्रजापति

बबली शर्मा

हेमांगी टाक

कनिका गुसाईं

सहायक समूह

कंटेंट राइटिंग टीम

2020-2021

मीनाक्षी उपाध्याय

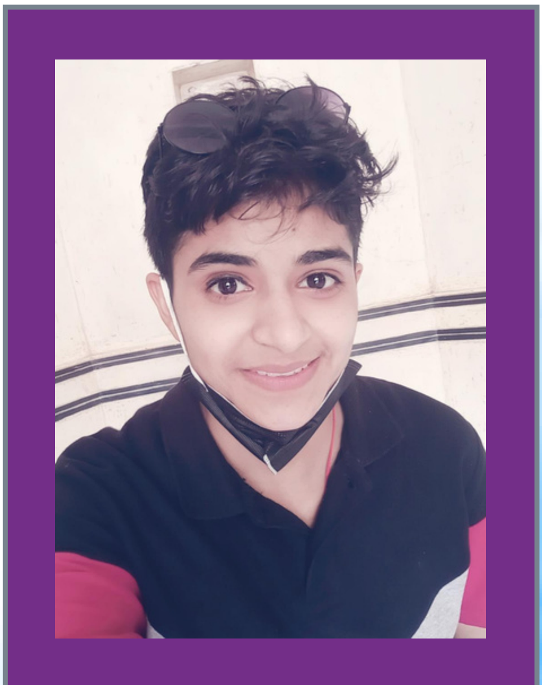

शारदा यादव

मितिक्षा गुप्ता

समीक्षा परिवार के सदस्य

१. हिमांशी यादव - बी.एल.एड (प्रथम)
२. सृष्टि – बी.ए. हिंदी ऑनर्स (प्रथम)
३. सिमरन सिंह – बी.ए. ऑनर्स हिंदी (प्रथम)
४. सृष्टि चोपड़ा – बी.ए. ऑनर्स इकोनॉमिक्स (प्रथम)
५. अनुभूति जैन – बी.ए. प्रोग्राम (द्वितीय)
६. अन्वेषा डे – बीएससी ऑनर्स जूलॉजी (द्वितीय)
७. बबली – बी.ए. ऑनर्स हिंदी (द्वितीय)
८. हेमांगी – बी.ए. प्रोग्राम (द्वितीय)
९. ईशा – बीएससी भौतिक विज्ञान (द्वितीय)
१०. मानसी – बी.ए. ऑनर्स हिंदी (द्वितीय)
११. मनस्वी – बी.बी.ई (द्वितीय)
१२. मितिक्षा – बीएससी ऑनर्स जूलॉजी (द्वितीय)
१३. मुस्कान – बी.बी.ई (द्वितीय)
१४. प्रीति – बीएससी ऑनर्स जूलॉजी (द्वितीय)
१५. रूशदा – बीएससी ऑनर्स मैथमेटिक्स (द्वितीय)
१६. साक्षी मिश्रा – बी.ए. ऑनर्स हिंदी (द्वितीय)
१७. संजीवनी खन्ना – बी.कॉम ऑनर्स (द्वितीय)
१८. सौम्या – बी.ए. प्रोग्राम (द्वितीय)
१९. सीता प्रजापति – बीएससी ऑनर्स जूलॉजी (द्वितीय)
२०. श्रेया – बी.कॉम प्रोग्राम (द्वितीय)
२१. आलिया – बी.ए. ऑनर्स राजनीति विज्ञान (तृतीय)
२२. कनिका – बी.ए. ऑनर्स इकोनॉमिक्स (तृतीय)
२३. खुशबू – बी.ए. ऑनर्स राजनीति विज्ञान (तृतीय)
२४. मीनाक्षी उपाध्याय – बी.ए. प्रोग्राम (तृतीय)
२५. प्रिया – बी.ए. ऑनर्स हिंदी (तृतीय)
२६. ऋषिका रस्तोगी – बी.कॉम ऑनर्स (तृतीय)
२७. शारदा यादव – बी.ए. प्रोग्राम (तृतीय)
२८. शिवानी – बी.कॉम ऑनर्स (तृतीय)
२९. विद्या – बी.ए. ऑनर्स राजनीति विज्ञान (तृतीय)

२०२०-२०२१ के पुरस्कार

खुशबू

१. इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन लिमिटेड द्वारा आयोजित पारंपरिक वाद-विवाद प्रतियोगिता में द्वितीय पुरस्कार।
२. शिवाजी महाविद्यालय द्वारा आयोजित पारंपरिक वाद विवाद प्रतियोगिता में सर्वश्रेष्ठ वक्ता का पुरस्कार।
३. आईआईटीबीएचयू द्वारा आयोजित संसदीय वाद विवाद प्रतियोगिता में फाइनलिस्ट।
४. मोतीलाल नेहरू महाविद्यालय द्वारा आयोजित संसदीय वाद विवाद प्रतियोगिता में फाइनलिस्ट।
५. शिवाजी महाविद्यालय द्वारा आयोजित संसदीय वाद विवाद प्रतियोगिता में क्वार्टर फाइनलिस्ट।
६. वेंकटेश्वर महाविद्यालय द्वारा आयोजित संसदीय वाद विवाद प्रतियोगिता में सेमी फाइनलिस्ट
७. वेंकेटश्वर महाविद्यालय द्वारा आयोजित संसदीय वाद विवाद प्रतियोगिता में सर्वश्रेष्ठ वक्ता

विशेष उपलब्धि÷

१. दयाल सिंह महाविद्यालय द्वारा आयोजित संसदीय वाद विवाद प्रतियोगिता में विजेता पुरस्कार।
२. शहीद भगत सिंह सांध्य महाविद्यालय द्वारा आयोजित संसदीय वाद विवाद प्रतियोगिता में विजेता पुरस्कार।

अन्वेषा डे

१. ग्लोबल यूथ हिंदू महाविद्यालय द्वारा आयोजित यूएस पेंटागन में सर्वश्रेष्ठ सलाहकार का पुरस्कार।
२. श्यामा प्रसाद मुखर्जी कॉलेज द्वारा आयोजित पारंपरिक वाद विवाद प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार।
३. आर्यभट्ट कॉलेज द्वारा आयोजित पारंपरिक वाद विवाद प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार।
४. ग्लोबल यूथ हिंदू महाविद्यालय द्वारा आयोजित यूएस सीनेट में हाई रिकमेंडेशन।
५. कालिंदी कॉलेज द्वारा आयोजित आशुभाषण प्रतियोगिता में द्वितीय पुरस्कार।
६. रामजस महाविद्यालय द्वारा आयोजित पारंपरिक वाद-विवाद प्रतियोगिता में द्वितीय पुरस्कार।
७. हंसराज महाविद्यालय द्वारा आयोजित पारंपरिक वाद विवाद प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार।
८. आर्यभट्ट कॉलेज द्वारा आयोजित पारंपरिक वाद-विवाद प्रतियोगिता में सर्वश्रेष्ठ वक्ता का पुरस्कार।
९. श्री औरोबिंदो महाविद्यालय द्वारा आयोजित पारंपरिक वाद विवाद प्रतियोगिता में सर्वश्रेष्ठ प्रश्नकर्ता का पुरस्कार।

मितिक्षा गुप्ता

१. एनएसएस गार्गी महाविद्यालय द्वारा आयोजित समूह चर्चा में तृतीय पुरस्कार।
२. श्यामा प्रसाद मुखर्जी कॉलेज द्वारा आयोजित पारंपरिक वाद विवाद प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार।
३. मैत्रेयी कॉलेज द्वारा आयोजित पारंपरिक वाद-विवाद प्रतियोगिता में तृतीय पुरस्कार।
४. श्री राम कॉलेज ऑफ कॉमर्स द्वारा आयोजित भूमिका निभाओ में प्रथम पुरस्कार।

सीता प्रजापति

१. एनएसएस गार्गी महाविद्यालय द्वारा आयोजित समूह चर्चा में प्रथम पुरस्कार।
२. इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन लिमिटेड द्वारा आयोजित पारंपरिक वाद-विवाद प्रतियोगिता में सर्वश्रेष्ठ प्रश्नकर्ता का पुरस्कार।
३. एबीवीपी यूनिटः जाकिर हुसैन दिल्ली कॉलेज द्वारा आयोजित पारंपरिक वाद विवाद प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार।
४. मोतीलाल नेहरू कॉलेज द्वारा आयोजित पारंपरिक वाद विवाद प्रतियोगिता में सर्वश्रेष्ठ प्रश्नकर्ता का पुरस्कार।

मीनाक्षी उपाध्याय

१. श्री औरोबिंदो कॉलेज द्वारा आयोजित पारंपरिक वाद विवाद प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार।
२. डॉ. भीमराव अंबेडकर कॉलेज द्वारा आयोजित पारंपरिक वाद विवाद प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार।
३. श्री औरोबिंदो कॉलेज द्वारा आयोजित पारंपरिक वाद विवाद प्रतियोगिता में द्वितीय पुरस्कार।

मनस्वी

१. दिल्ली तकनीकी विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित टर्नकोट वाद विवाद प्रतियोगिता में तृतीय पुरस्कार।
२. मंच पारंपरिक वाद विवाद प्रतियोगिता में प्रथम रनरअप का पुरस्कार।
३. स्टेट यूथ फेस्टिवल द्वारा आयोजित पारंपरिक वाद विवाद प्रतियोगिता में द्वितीय पुरस्कार।

सौम्या सेन

१. मैथेमेटिकल स्पेस पारंपरिक वाद विवाद प्रतियोगिता में सर्वश्रेष्ठ प्रश्नकर्ता का पुरस्कार।
२. हंसराज महाविद्यालय द्वारा आयोजित पारंपरिक वाद विवाद प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार।

सृष्टि नेगी

१. आचार्य नरेंद्र देव कॉलेज द्वारा आयोजित पारंपरिक वाद विवाद प्रतियोगिता में तृतीय पुरस्कार।
२. हंसराज महाविद्यालय द्वारा आयोजित पारंपरिक वाद-विवाद प्रतियोगिता में तृतीय पुरस्कार।

विशेष उपलब्धि

शहीद भगत सिंह सांध्य महाविद्यालय द्वारा आयोजित संसदीय वाद विवाद प्रतियोगिता में विजेता पुरस्कार।

सिमरन सिंह

रश्मि कम्युनिकेशन द्वारा आयोजित पारंपरिक वाद विवाद प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार।

साक्षी मिश्रा

जतारा टीकमगढ़ में आयोजित पारंपरिक वाद विवाद प्रतियोगिता में तृतीय पुरस्कार।

हेमांगी तक

डी.पी.एस.आर.यू द्वारा आयोजित पारंपरिक वाद-विवाद प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार।

रूशदा

१. रश्मि कम्युनिकेशन द्वारा आयोजित पारंपरिक वाद विवाद प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार।
२. पीजीडीएवी महाविद्यालय द्वारा आयोजित समूह चर्चा में द्वितीय पुरस्कार।

हिमांशी यादव

१. हंसराज महाविद्यालय द्वारा आयोजित पारंपरिक वाद-विवाद प्रतियोगिता में तृतीय पुरस्कार।

विशेष उपलब्धि

शहीद भगत सिंह सांध्य महाविद्यालय द्वारा आयोजित संसदीय वाद विवाद प्रतियोगिता में विजेता पुरस्कार।

बबली शर्मा

इंडियन ऑयल कॉरपोरेशन लिमिटेड द्वारा आयोजित प्रतियोगिता में सर्वश्रेष्ठ प्रश्नकर्ता का पुरूस्कार।

शारदा यादव

इंडियन ऑयल कॉरपोरेशन लिमिटेड द्वारा आयोजित प्रतियोगिता में सर्वश्रेष्ठ वक्ता का पुरूस्कार।

प्रिया सिंह

श्री वेंकटेश्वर महाविद्यालय द्वारा आयोजित पारंपरिक वाद विवाद प्रतियोगिता में तृतीय पुरूस्कार।

ऋषिका रस्तोगी

मॉडल युनाइटेड नेशन में प्रथम पुरूस्कार

विद्या ठाकुर

शिवाजी महाविद्यालय द्वारा आयोजित पारंपरिक वाद विवाद प्रतियोगिता में प्रथम पुरूस्कार।

गुरुजनों की कलम से

शुभकामनाएं

- डॉ. पार्वती शर्मा,संयोजिका

हिंदी के बहुआयामी विकास एवं विस्तार में सृजनात्मक लेखन की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही है,यद्यपि हिंदी के विस्तार के तीन प्रमुख आधार साहित्य, शिक्षण एवं संचार हैं तथापि हिंदी की लोकप्रियता हिंदी नाटकों एवं हिंदी सिनेमा इन दो प्रधान अवयवों पर भी आधारित है।यों पत्रकारिता जगत में मनुष्य-मन की अपरिमित संवेदनाओं और विविध विवेचनात्मक दृष्टिकोण को समय-समय पर पत्रिकाओं ने इसी दायित्व-बोध का भली-भांति निर्वाह बुद्धिजीवी समाज में किया है।वस्तुतः लेखन-कार्य हमारे अपने आस-पास के परिवेश, परिस्थितियों और सामाजिक चिंतन के 'तेवरों' को शब्दों के माध्यम से सामने लाने का बेहतर माध्यम बनता है और हम अपने सभी चिंतन-मनन से जुड़े विषयों को अभिव्यक्त करने के उपरांत मुक्त हो जाते हैं।इसी कारण 'शब्द और अर्थ' के संयोग की यही गाथा साहित्य द्वारा प्रकट होती है और यही शब्द-संवाद के माध्यम से हमारे समाज के अनेक विमर्श और चिंतनीय पक्ष के अंतर्गत आने वाले एक नागरिक दायित्व की भूमिका का भी सफल निर्वाह करते हैं। यह अत्यंत सुखद क्षणों की अनुभूति ही है कि कॉलेज की समीक्षा वाद-विवाद समिति के अंतर्गत प्रकाशित होने वाली पत्रिका 'प्रज्ञा' के ई-प्रकाशन और इसके सुखद भविष्य के प्रति मैं आप सभी को अपनी शुभकामनाएं प्रेषित करती हूं।इस पत्रिका के माध्यम से विद्यार्थी-मंथन-जगत् के अंतर्गत प्रकट होने वाले लेख, कहानी, समसामयिक कविताएं और चिंतन के विविध रूप पाठकों के समक्ष पहुंचकर एक नवीन आयाम को स्थापित करेंगे, इन्हीं शुभकामनाओं के साथ मैं इस 'प्रज्ञा' पत्रिका के सुखद और उज्ज्वल भविष्य की कामना करती हूं।

शुभकामनाएं

~डॉ. मीना , सह-संयोजिका

समीक्षा गार्गी महाविद्यालय की एक सक्रिय वाद-विवाद समिति है ।जो निरंतर अपने विद्यार्थियों को आगे बढ़ाने में प्रयासरत हैं | सक्रिय और लोकप्रिय समिति के रूप में आज इसका अपना एक अलग स्थान है | यह निरंतर समसामयिक विषयों व ज्वलंत मुद्दों पर विचारों के सांझेदारी का मंच है | जो अपने विद्यार्थियों के सर्वांगींण विकास के लिए समय समय पर विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन करवाता है | जिसमें विभिन्न महाविद्यालयों , विश्वविद्यालयों एवं संस्थाओं के विद्यार्थियों का तमाम प्रतियोगिताओं में भरपूर सहयोग रहता है । यह समिति अपने विचारों और स्वस्थ विमर्शों से तर्क और मौलिकता के साथ अपने नए विचारों और आधारों का निर्माण करती है । जो उनके व्यक्तित्व के विकास में एक रचनात्मक भूमिका निभाती है । अभिव्यक्ति विचारों का एक ऐसा सुंदर धरातल है जो विचारों में परिवर्तन को एक नया आधार देता है । इसी अभिव्यक्ति , विचार और परिवर्तनों के आग्रह के साथ ही हिंदी वाद-विवाद समिति प्रस्तुत कर रही है अपनी ई-पत्रिका 'प्रज्ञा' का दूसरा अंक । यह पत्रिका विद्यार्थियों को एक सार्थक और मज़बूत मंच देने के साथ-साथ उनकी रचनात्मक प्रतिभा को प्रोत्साहित कर अवसर प्रदान करेगी । मैं बड़े ही गर्व के साथ 'प्रज्ञा' के दूसरे अंक को अपनी समस्त शुभकामनाएं देती हूँ और मंगलकामनाएं देती हूँ इस पत्रिका की पूरी टीम को , हिंदी वाद-विवाद के पूरे परिवार को । विद्यार्थियों द्वारा पत्रिका का यह दूसरा अंक निश्चित ही सराहनीय है । आशा करती हूँ विचार से विमर्श और आदर्श से यथार्थ की यह यात्रा तर्क , मौलिकता के साथ जो इन प्यारे-प्यारे नवयुवकों में नये विचारों और नये आधारों का निर्माण करेगी । ऐसी मेरी कामना है ।

अन्वेषण '21

संसदीय वाद-विवाद प्रतियोगिता (सातवां संस्करण)

13-14 फरवरी, 2021 को गार्गी महाविद्यालय द्वारा द्वि-दिवसीय, अन्वेषण: संसदीय वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें विभिन्न महाविद्यालयों के कुल 28 दलों ने भाग लिया था| इस शुभ अवसर पर हमारे समक्ष विशिष्ट अतिथि के रूप में राहुल दूबे के साथ वे सभी वरिष्ठ वक्ता मौज़ूद थे, जो अपने समय में वाद-विवाद में अग्रणी रहे व जिनके पास वाद-विवाद का विशिष्ट अनुभव था| पहले दिन प्रतियोगिता आरंभ होने से पहले सभी अतिथियों का हार्दिक स्वागत किया गया| प्रतियोगिता ऑनलाइन रूप में ज़ूम पर आयोजित की गई| सर्वप्रथम मंच संचालक द्वारा अतिथियों का परिचय सभी के समक्ष प्रस्तुत किया गया। इसके पश्चात महाविद्यालय की प्राध्यापिकाओं ने बड़े उत्सुकता के साथ सभी प्रतिभागियों को प्रतियोगिता में सहभागिता के लिए धन्यवाद करते हुए शुभकामनाएं दी| इसी बीच हमारे समक्ष अनुप्रिया राणा भी मौजूद थी जिन्होंने इस प्रतियोगिता का आरम्भ 7 वर्ष पूर्व किया था| उन्होंने भी मंच पर अपने अनुभवों को साझा किया| अतिथियों ने भी अपने विचार व्यक्त किए| उसके पश्चात मंच संचालक ने सभी प्रतिभागियों को प्रतियोगिता के नियमों से अवगत कराया|

इसी के साथ प्रतियोगिता का शुभारंभ हुआ तथा सभी प्रतिभागियों ने चूंकि एक ही मंच पर सभी प्रतिभागियों द्वारा इस प्रतियोगिता में विचारों की अभिव्यक्ति कर पाना असंभव है इसीलिए इस प्रतियोगिता के फॉर्मेट को ध्यान में रखते हुए ज़ूम में अलग-अलग ब्रेकआउट रूम बनाए गए जहां पर इस प्रतियोगिता के तीन चरण सफलतापूर्वक संपन्न हुए| वातावरण रोचकता व उत्सुकता से परिपूर्ण था| तृतीय चरण के बाद परिणामों की घोषणा हुई तथा अगले दिन वे सभी चयनित दल आए और इसी प्रकार फिर से प्रतियोगिता आरंभ हुई| सभी चरणों के पश्चात अंत में निर्णायक-गण ने प्रतिभागियों के वक्तव्य से प्राप्त निष्कर्ष पर चर्चा करने के साथ-साथ विषय के संदर्भ में अपने विचार भी प्रस्तुत किए। अंत में परिणाम की घोषणा की गई| सर्वश्रेष्ठ स्थान पर एआरएसडी क्रॉस, द्वितीय स्थान पर शहीद भगत सिंह(संध्या) महाविद्यालय रहा, सर्वश्रेष्ठ वक्ता दयाल सिंह महाविद्यालय को प्राप्त हुआ| अंत में समीक्षा समिति की अध्यक्षा ने सभी को धन्यवाद दिया| इस प्रकार प्रतियोगिता का समापन समीक्षा: हिंदी वाद-विवाद समिति के सदस्यों व प्राध्यापकों के सहयोग से सफल हुआ|

गूंज' 21

पारंपरिक वाद-विवाद प्रतियोगिता (प्रथम संस्करण)

"भारतीय बुद्धिजीवियों का यह सदन अंतरिक्ष क्षेत्र में निजी हिस्सेदारी का विरोध करता है"

27 जनवरी 2021 को गार्गी महाविद्यालय द्वारा गूंज : पारंपरिक वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया| लगभग 15 दलों ने प्रस्तुत प्रतियोगिता में भाग लिया था| अधिक संख्या में अन्य विद्यार्थियों ने भी रोचकता के साथ दर्शकों की भूमिका निभाई| इस शुभ अवसर पर हमारे समक्ष विशिष्ट अतिथि के रूप में डॉ. रागिनी, अनुराग सिंह शेखर और नीतीश कुमार झा उपस्थित थे| सभी अतिथियों का हार्दिक स्वागत किया गया| प्रतियोगिता ऑनलाइन रूप में आयोजित की गई थी| सर्वप्रथम मंच संचालक द्वारा अतिथियों का परिचय सभी के समक्ष प्रस्तुत किया गया। इसके पश्चात महाविद्यालय की प्राध्यापिकाओं ने बड़े उत्सुकता के साथ सभी प्रतिभागियों को प्रतियोगिता में सहभागिता के लिए धन्यवाद करते हुए शुभकामनाएं दी|इसी के साथ प्रतियोगिता का शुभारंभ किया गया तथा सभी प्रतिभागियों ने क्रमानुसार ऑनलाइन मंच पर अपने वक्तव्य (पक्ष या विपक्ष) को प्रस्तुत किया। वातावरण रोचकता व उत्सुकता से परिपूर्ण था| दर्शकों ने ऑनलाइन मंच के द्वारा भी तालियों की गड़गड़ाहट से प्रतिभागियों का आत्मविश्वास दृढ किया| सभी प्रतिभागियों के वक्तव्य देने के पश्चात अंत में निर्णायक-गण ने प्रतिभागियों के वक्तव्य से प्राप्त निष्कर्ष पर चर्चा करने के साथ-साथ विषय के संदर्भ में अपने विचार भी प्रस्तुत किए। चारों ओर एक जोश भरा माहौल बना हुआ था|
अंत में निर्णायक मंडली ने परिणाम की घोषणा की तथा जीते हुए प्रतिभागियों व अन्य सभी विद्यार्थियों को ऐसे ही मेहनत जारी रखने के लिए प्रोत्साहित किया| सर्वश्रेष्ठ दल का पुरस्कार किरोड़ीमल महाविद्यालय के छात्रों को प्राप्त हुआ, द्वितीय सर्वश्रेष्ठ दल दयाल सिंह महाविद्यालय से, सर्वश्रेष्ठ वक्ता मोतीलाल नेहरू महाविद्यालय से और सर्वश्रेष्ठ प्रश्नकर्ता रामजस महाविद्यालय को प्राप्त हुआ| इस प्रकार प्रतियोगिता का समापन समीक्षा: हिंदी वाद-समिति के सदस्यों व प्राध्यापकों के सहयोग से सफल हुआ|

२०२०-२१ सत्र

समीक्षा हिंदी वाद विवाद समिति, गार्गी महाविद्यालय, छात्रों को एक बेहतर नागरिक बनाने में विश्वास रखती है। और इस विश्वास को कायम रखने के लिए समिति हर स्तर पर कार्य कर रही है। समीक्षा के नेतृत्व की बागडोर संभालतीं हैं संयोजिका पार्वती शर्मा मैम एवं सह संयोजिका डॉ. मीना मैम। कार्यकारिणी समिति की सदस्या - खुशबू (अध्यक्षा), संजीवनी (उपाध्यक्षा) एवं श्रेया (कोषाध्यक्षा), प्रत्येक आयोजन को सफल बनाने में हमेशा प्रयासरत रहती हैं। इसके साथ साथ प्रत्येक कार्यक्रम के सुसंचालन के लिए समीक्षा के भीतर भी तीन टीमों का गठन किया गया है- कंटेंट राइटिंग टीम, सोशल मीडिया टीम एवं क्रिएटिव टीम, जो प्रत्येक आयोजन से जुड़े कार्यों को संभालती हैं।प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी समीक्षा समिति का सफर उत्साह एवं जोश पूर्ण रहा। समीक्षा ने नए सदस्यों के आगमन के लिए तीन चरणों में ऑडिशंस की प्रक्रिया पूर्ण की और नवीन छात्रों को समिति में सम्मिलित किया। इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन लिमिटेड के सहयोग के साथ समीक्षा ने दिनांक 5 नवंबर 2020 को एक पारंपरिक वाद विवाद प्रतियोगिता का आयोजन कराया जिसमें शारदा विजेता एवं खुशबू उपविजेता रहीं। इसके पश्चात समिति को दिनांक 27 जनवरी 2021 को एक और पारंपरिक वाद विवाद प्रतियोगिता "गूंज" के आयोजन का मौका प्राप्त हुआ जिसमें किरोड़ीमल महाविद्यालय विजेता एवं दयाल सिंह कॉलेज उपविजेता रहे। साथ ही मोतीलाल नेहरू कॉलेज के छात्र आदित्य मिश्रा को सर्वश्रेष्ठ वक्ता का पुरस्कार प्राप्त हुआ। समीक्षा समिति सिर्फ पारंपरिक वाद-विवाद प्रतियोगिताओं में हीं नहीं बल्कि संसदीय वाद विवाद प्रतियोगिता के आयोजन में भी स्वयं का लोहा मनवा चुकी है। दिनांक 13-14 फरवरी 2021 को समिति द्वारा 'अन्वेषण' के सातवें एवं प्रथम ई- संस्करण का आयोजन कराया गया जिसमें दिल्ली विश्वविद्यालय के लगभग सभी कॉलेजों के उभरते वाद विवाद कर्ताओं को मंच प्रदान किया गया। इन सभी आयोजनों की सफलता के पीछे समीक्षा के अध्यापिका संयोजिकाओं, कार्यकारिणी समिति एवं सदस्यों की कड़ी मेहनत एवं एकजुटता रही।

डिजिटल कार्यक्रमों की डिजिटल झलक

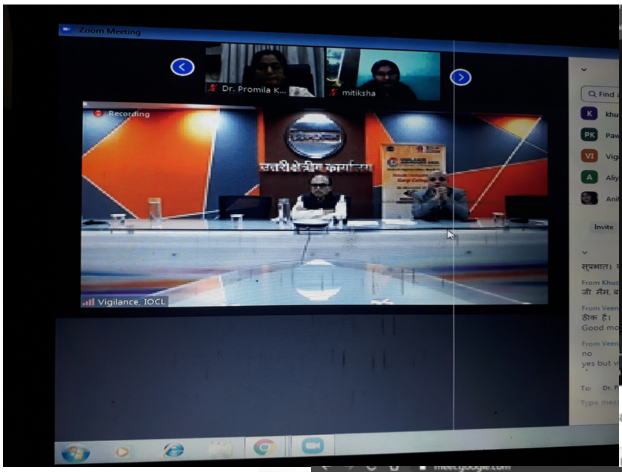

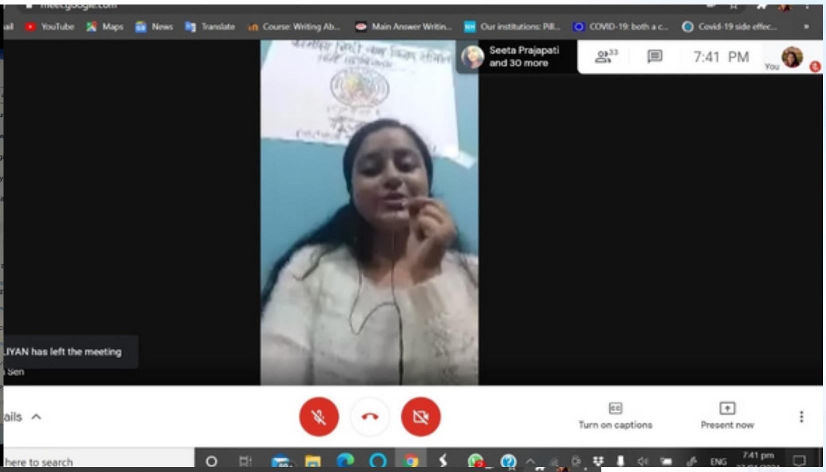

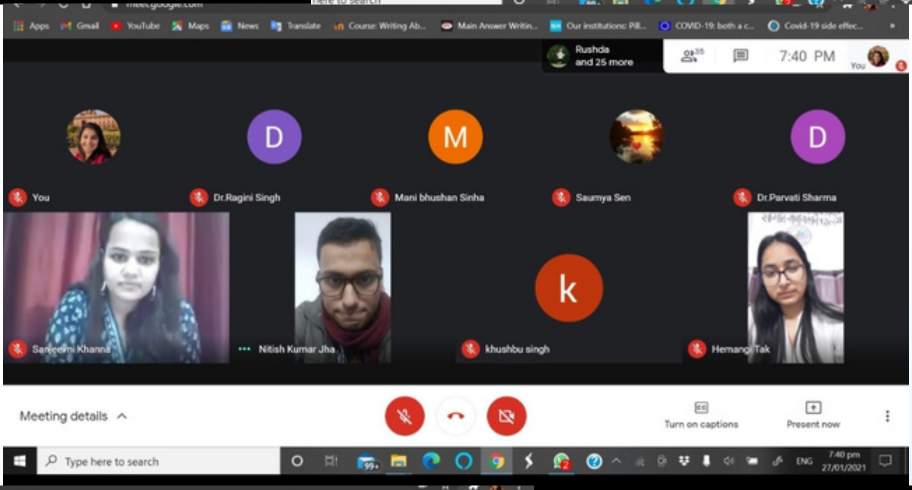

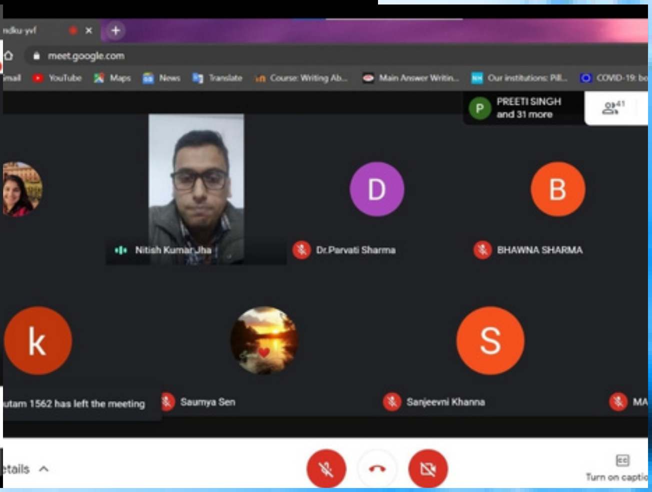

सदस्यों की कलम से

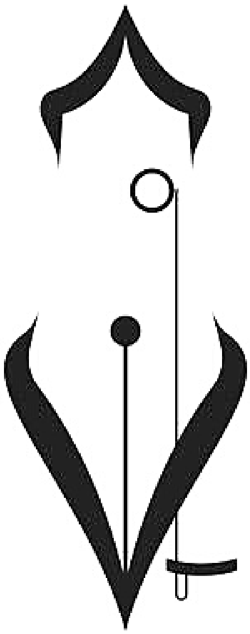

Pinterest.in

शान्ति

अनुभूति जैन

हर गीत के संगीत मे,
और प्रेम के रंगरीत मे
है शान्ति...

हृदय के अंतर में
और रेत के हर कण में
है शान्ति...

माँ की नाराज़गी में
और गाँव की ताज़गी में
है शान्ति...

मोतियों की धूल में
और नीरव के हर शूल में
हैं शांति...

गूँज रहा है जो आज,
वहाँ कभी शांत था,
और पुनः अर्पित होगा जिसमें
वह है शान्ति...

शान्ति एक संगीत है,
सुर-ताल में जो निहित है,
यति के आनन्द का संकेत है,
प्रेम व्योमी के मन का वह खेद है

शान्ति रंगीन है, इसे रंगहीन मत कहना।
शान्ति संगीत है, इसे सुरहीन मत कहना।।
यह सुख शय्या है, इसे कष्ट मत कहना।
शान्त रहने वाले को, भ्रष्ट मत कहना।।

क्योंकि,
ईश्वर के दर तक पहुँचाने वाले है शान्ति।
ठुकराया अगर इसे,
तो खो दोगे अपनी कान्ति।।

शांत दिमाग खाली नही विचार पूर्ण होता है।
जिसकी दृष्टि में बसा गरुड होता है।।

क्योंकि,
चिमनी के प्रदूषण में,
और जोगी के मन मे,
है शान्ति...

नाविक की नय्या में,
और मृत्यु की शय्या में,
है शान्ति...

लॉकडाउन के बाद दिल्ली की पहली यात्रा

बबली शर्मा

निकली फिर आज कुछ जाने पहचाने सफर पे,
भीड़ थी जहाँ महफिलें सजाती, व्यापार होता था जहाँ हर शजर पे,
सोचा था सो रहा होगा मोहल्ला, साजिशें शांत बैठी होगी किसी कोने में,
मातम पसरा होगा इस दिल्ली को, शुक्र बनाते होंगे जो बचे है इस खिलौने में,
सोच रही थी भूले जो रास्ते थे, डगमगाते हुए पहुंच ही जाएंगे उस ओर गलती से,
फिर वही शोर, फिर वही लोग, हर कोई निकला हुआ था जल्दी में,
फिर वही धुंआ था, फिर वही जहर था, क्या बदला क्या बदलेगा?
फिर कोई घर, खिड़की से निकल कर एक बिखरे घर की कहानी दूसरे घर को कहेगा,
फिर वहशत गूंजेगी हर रात हर गली-गली,
फिर सुबह होते ही हर घर से भजन निकलेगा,
वही हंगामा कर रहा है, वही उसका अंजाम है,
वो मर्द समझता है खुद को जो कोठों पर बदनाम है,
फिर बिकेगा जिस्म वहीं, फिर वही मतलबी लोग बात शुरू करेंगे 'मगर' से,
भीड़ जहाँ महफिले सजाती है, व्यापार होता है जहाँ हर शजर पे।

कूड़े का एक पहाड़ वहीं,
आस-पास चलती गाड़ियों की दहाड़ वहीं,
सोचती हूँ किसी को रोक कर पूछ ही लूं,"क्या हाल है?"ज़बरदस्ती से
मैं जानती हूं वो 'ठीक हूँ' ही बोलेगा, पर दोस्त तो बन जाएगा कोई अज़नबी से,
लेकिन कौन रुके चलती दुनिया में, कौन हाल पूछे, कौन झुके,
हर कोई बड़ा समुन्दर है यहाँ, हर कोई तमाशा देख रहा है कि पहले कौन सूखे?
फिर कोई आवारा भेड़िया किसी बहन बेटी से टकराएगा,
फिर गली में चिल्लाने वाला समाज, चौक पर मोमबत्ती लेकर आ जाएगा,
रावण जलाने वाले इस शहर में, बताना अगर कोई राम दिखे तुम्हारी नजर में,
भीड़ जहाँ महफिले सजाती है, व्यापार होता है जहाँ हर शजर पे।

वैचारिक मतभेद और अस्तित्व

सीता प्रजापति

वैचारिक मतभेद जब जगह बनाते हैं अपने किसी भी संदर्भ में, तब अनेक कहानियां, अनेक विचार अपना अस्तित्व खो देते हैं। वैचारिक मतभेद होना जायज़ है लेकिन हम अपने विचारों के साथ-साथ सामने वाले के विचारों का सम्मान कर अपनी नैतिकता दर्शाते हैं। वैसे तो नैतिकता भी व्यक्तिपरक हैं लेकिन जब मैं संदर्भ एक काल्पनिक परिस्थिति का दूं तब दूसरों के साथ वैसा ही व्यवहार करना नैतिकता बन जाता है जैसा आप स्वयं के साथ व्यवहार की आकांक्षा दूसरों से रखते हैं। काफ़ी अंधेरी रातों में जब दुनिया नींद में होती है तब कुछ ख़्वाब किसी के अंदर जाग रहे होते हैं और वह व्यक्ति जो उस संघर्ष के लिए जाग रहा है उसे समाज से पहले ख़ुद के अपनों से अपने विचारों को उड़ान देने के लिए मंथन करना पड़ता है, उन्हें भरोसा दिलाना पड़ता है। उनकी शर्तों को साथ लेकर आगे बढ़ते ही हैं कि यह समाज प्रश्नचिन्ह खड़े कर देता है अब यहीं फिर तैयार होता है मंच जहां चर्चा का विषय आप होते हैं, आप ही वक्ता होते हैं और निर्णायक की भूमिका अदा करते हैं, समाज व कुछ अपने तर्क आते हैं– क्या भविष्य है यह काम करने का, उसने किया था उसका तो नहीं हुआ, तेरा कैसे होगा, बाहर जाकर क्या करोगे, घर से क्यों नहीं कर सकते।

फिर आरोप प्रत्यारोप का दौर प्रारम्भ होता है सिर्फ आपके व्यवहार व वर्तमान कथित दुनिया के बीच में, और जब समाज को भी हिम्मत बांधकर जवाब दे दिया जाए तब कहीं दूसरी जगह जाकर खुद को उस पायदान पर लाना जहां की आशा हमारा सपना रखता है हिम्मत तोड़ देता है। रोज-रोज अब हम खुद ही खुद से लड़ने लगते हैं, और खुद से ही खुद की परेशानियों के लिए जवाब तलाशने लगते हैं।

अगर यह विचारों का दौर अपनी आखिरी सांस ना ले व्यक्ति के अन्दर तब क्या होगा? अगर व्यक्ति वैचारिक मतभेद ख़ुद से ही ख़ुद में विकसित कर ले तब क्या होगा? और अगर व्यक्ति स्वयं के अस्तित्व के लिए वैचारिक मतभेद के चक्रव्यूह में फंस जाए तब क्या होगा?

कोरोना के कुछ खास दिन

ईशा अग्रवाल

साल 2020 में पूरे विश्व पर महामारी का खतरा मंडरा रहा था, कोविड-19 नामक एक छोटे से वायरस ने अपना जलवा कुछ ऐसा बिखेरा था कि विश्व के अधिकतर वर्ग ने बेरोजगारी का दौर देखा था। फिर भी यह साल कुछ ऐसी यादें दे गया जो 21वीं सदी के लोग कभी नहीं भुला पाएंगे, फिर चाहे वह कोई भारतीय त्योहार हो या दूल्हा-दुल्हन के गले में पड़ा हार हो, सभी का कुछ अलग, कुछ अनोखा, कुछ अद्भुत रूप देखने को मिला। तो आज इस लेख में हम बात करेंगें कुछ ऐसे ही पलों की जो अनेक लोगों के मन में गहरी छाप छोड़ गए और अपने पीछे दे गये कुछ खट्टी मीठी यादें !

कोरोना काल की शादियां

शादी यानी विवाह हर एक जोड़ी के जीवन में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है और भारतीय संस्कृति में हर जाति, धर्म और राज्य के अनुसार शादियों के रीति-रिवाज और तौर-तरीके बदलते रहते हैं। परंतु कोरोना के कारण सब पर जैसे पानी सा फिर गया, न बारात को ताकती घरातियों की आंखें थी, न बैंड और शहनाई पर नाचते लोग। बंधन ऐसे बंध रहे थे कि इससे बेहतर तो सलाखें थी, परंतु इसमें भी लोगों ने कुछ अच्छे पल ढूंढ लिए थे, रिश्तेदारों से ऑफलाइन ना सही ऑनलाइन मोड पर ही मिल लिए थे। फूफा जी ने अपना नागिन डांस ज़ूम ऐप पर दिखाया था और मामा-मामी ने अपना कपल डांस वर्चुअल ही दर्शाया था। भले ही ना मिल पाया हो जोड़े को ऑफलाइन आशीर्वाद, भले ही ना हुई हो स्टेज फोटोग्राफी पर खुशी इस बात की थी कि बस लड़की के मौसा ने ही सही पर किसी ने तो अपना आशीर्वाद पेटीएम करके जताया था। भले ही जूता चुराई की रस्म न हुई हो परंतु जोड़ी ने आशीर्वाद भरपूर पाया था। हालांकि नहीं मिला लोगों को फैंसी कपड़े देख कर कमेंट करने का मौका पर फूफा जी को पजामे में नागिन डांस करते देख कर मजा बहुत आया था।

यह तो बात हुई शादियों में होने वाले बदलावों की परंतु कोरोना काल के जन्मदिन का भी अपना विशेष महत्व था।

कोरोना काल में बीते जन्मदिन

जन्मदिन यानी बर्थडे का नाम सुनते ही हमारे दिमाग में जो पहली छवि उतरती है वह है जन्मदिन की पार्टी की और हो भी क्यों ना भाई साल में एक बार जो मिलती है। हालांकि कोरोना में बीता जन्मदिन कुछ विशेष था, टीवी पर गाने और फोन में एक मैसेज बहुत स्वीट था। नहीं थे दोस्त मगर इंस्टाग्राम फोटो पर लाइक बहुत थे , नहीं काट पाए लोग केक बेकरी का परंतु मैगी के केक का विचार कुछ अलग था, नहीं मिल पाए दोस्त इस साल, पर ऑनलाइन ही मचा दिया धमाल, किसी का अंताक्षरी में बेसुरा गाना गाना, तो किसी का बेकार के चुटकुलों से पकाना, भले ही इस बार दोस्तों का ना मिला हो साथ पर कितने सालों बाद बर्थडे की पार्टी में पापा थे साथ।

जिन्दगी

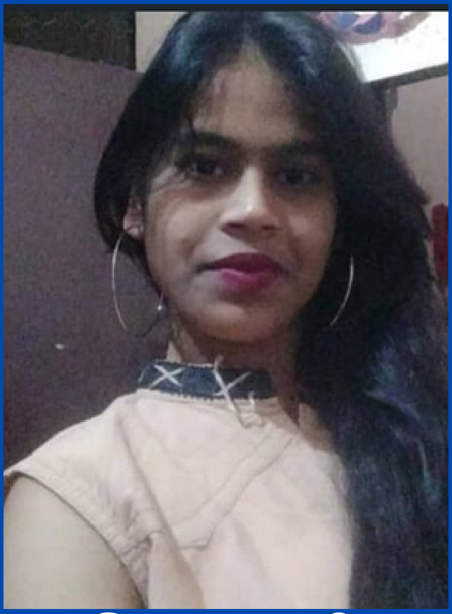

प्रिया कुमारी

ज़िन्दगी एक समंदर है
डूब कर जाना है
हंसते गाते
जीवन बिताना है।

मानती हूं कठिनाई
बहुत है, इस आलम में
पर हार मान जाना समाधान तो नहीं।

ज़िन्दगी वो है जो
सब कुछ तुमको दे जाती है, जीना कैसे है
यह तुम पर निर्भर करता है।

ज़िन्दगी को ज़िन्दगी की तरह जियो
समस्या की तरह नहीं क्योंकि,
समस्या कभी पीछा नहीं छोड़ती लेकिन
एक सकारात्मक सोच, ज़िन्दगी को सफल बना देती है।

हे गुरु!

रुशदा

हे गुरु! है शत्-शत् प्रणाम तुम्हें,
तुम्हारी स्वार्थहीन सेवाओं के लिए है कोटि-कोटि धन्यवाद तुम्हें।

सबसे पहला नमन मेरा है तुमको,
जो सूक्ष्म से दिग्गज बना दिया हमको।

हर एक कदम को रखना सिखाया तुमने,
लड़खड़ाए जो, फिर से चलना सिखाया तुमने।

ज्ञान का जो तुमने दीपक जलाया,
उसने संसार का हर वैभव दिलाया।

गीली, मृदु मिट्टी से कड़क घड़ा तैयार किया,
नाम तो मिल गया था सबसे,

तुमने उसे लिखने का कौशल दिया।
जब कभी भटक गए तो ज़ोर से फटकार लगाई,

समझाया बार-बार हर बार कोई नई बात सिखाई
हे गुरु! बस एक ही इच्छा है अब मेरी,

चुका सकूं पाई-पाई मैं तेरी।
लिया है जो ऋण तुझसे,मुक्त हो सकूं मैं उससे।

नाम तेरा रोशन कर दिखलाऊं,
बस कर बड़ा कोई काम दिखलाऊं।

आओ राष्ट्रप्रेम समझें

रुशदा

अब सुनो गाथा इस व्यक्ति की,
मन पुलकित कर दिया जिसने मेरा।
वह न कहता स्वयं को राष्ट्रप्रेमी,
बस निभाता सदैव अपने कर्तव्य है।
देशवासियों से प्रेम वह करता है,
मन में कभी न रखता बैर न द्वेष।
ईमानदारी से उसने स्वयं को सजाया है,
न रिश्वत, न चोरी ने उस को आकर्षित कर सका है।
गंदगी पसंद ना करता वह,
पर घर का कूड़ा सड़क पर न फेंकता।
सभी जीव-जंतु है उसको जान से प्यारे,
प्रतिदिन भोजन जानवरों को देता।
संविधान उसकी पुराण है,
पराक्रमी सैनिक उसके भाई-बंधु।
महापुरूषों से प्रेरणा वह लेता है,
उनकी कही बातें जीवन में अपनाता है।
जहां तिरंगा दिख जाए उसको,
रुक कर प्रणाम करता है।

आस-पास सब जब देखूं अपने,
मन मेरा विचलित हो जाएं।
नए युग का नया राष्ट्र,
विचित्र राष्ट्रप्रेम दिखलाए।
जोशपूर्ण मन व ताकतवर शरीर,
बड़ी-बड़ी बातें कर जाएं।
वे तथाकथित राष्ट्रप्रेमी,
वायु में राष्ट्रवाद घोल जाएं।
विचित्र ये प्राणी है,
जो देश में क्लेश कर जाए।
योजनाओं को तो बदलना है,
परंतु पालन कितनों को करना है?
राष्ट्रप्रेमी तो सब कहलाए,
पर राष्ट्रप्रेम वह समझ ना पाए।

समझी अब मैं राष्ट्रप्रेम को,
द्वंद्व सारे समाप्त हो गए।
महान् तो वह व्यक्ति कहलाया,
जो बिन जताए सब कर दिखलाया।
राष्ट्रप्रेम हो हम सबके भीतर,
अपने व्यक्तित्व को ऐसा तराश दो।
राष्ट्रप्रेमी सिर्फ बलिदानी नहीं होते,
वे हम आप जैसे लोग भी होते हैं।
हां! सरहदों पर लड़ना है राष्ट्रप्रेम,
परंतु सरहदों के अंदर ना लड़ना भी है राष्ट्रप्रेम।
न कोई तुम नारा लगाओ,
बस आत्मा शुद्ध कर दिखलाओ।
राष्ट्रप्रेम की तुम अपनी परिभाषा लाओ,
याद रखो देश हित और राष्ट्र सज्जित कर जाओ।

स्वयं से पहले सेवा

रुशदा

समाप्त अपना अहं करो,
वरना क्या तुम पाओगे?
खोकर जब सब पछताओगे,
बोलो उसको वापस कैसे लाओगे?
बहुत हुआ समय का प्रहार,
बीता वक्त क्या वापस पाओगे?
आंखें जो मूंद रखी है तुमने,
सच्चाई कैसे देख सकोगे?
अभी जो तुम शांत हो,
पछतावे से क्या पाओगे?

चलो बात अब खत्म करो।
स्वयं से पहले सेवा हो,
ऐसा चरित्र निर्माण करो।।

बहुत हुआ गृह-क्लेश,
चलो अब भाईचारा लाओ।
स्वयं की पहचान करो,
तुम अच्छे सब काम करो।

सब के भाव-विचारों को समझो,
नई दिशा की ओर अग्रसर हों।
जो दिया जाए सबको,
ऐसा तुम उदाहरण बनो।

सभी से प्रेम कर,
बुराइयों का त्याग करो।

चलो बात अब खत्म करो।
स्वयं से पहले सेवा हो,
ऐसा चरित्र निर्माण करो।।

लड़की हो तुम

साक्षी मिश्रा

लड़की हो तुम, कम बोला करो।
लड़की हो तुम, घर में ही रहा करो।
लड़की हो तुम, घर का काम किया करो।
लड़की हो तुम, ऐसे कपड़े न पहना करो।
लड़की हो तुम, लड़कों से बात मत किया करो।
लड़की हो तुम, कोई ज़ुल्म करे तो सह लिया करो।
लड़की हो तुम, जरा सब्र किया करो।
पराये घर जाना है तो यहां मर्यादा में रहा करो।
लड़की हो तुम, घर की इज्ज़त का तो सोचा करो।
लड़की हो तुम, सलीके से हंसा करो।
लड़की हो तुम, मन की न किया करो।
क्यों नहीं कह देती दुनिया लड़की हो तुम, हो सके तो सांस ही
मत लिया करो।

क्यों हो निराश तुम?

मानसी रुडोला

आज का मनुष्य स्वयं की मानसिक परेशानियों से इतना ज्यादा घिरा हुआ है कि उसको पता ही नहीं होता उसे परिस्तिथियों में कब किस तरह से कुछ नये ढंग से प्रस्तुत करना है और ध्यान दिया जाए तब आधी से ज़्यादा समस्याओं को वह अपनी काल्पनिकता से ही जन्म देता है जिनका आधार शायद स्वयं वह खुद भी नहीं जानता।

मैथिलीशरण गुप्त द्वारा रचित कविता 'नर हो, न निराश कर मन को' आज भी उतनी ही प्रेरणादायक है जितना कि पूर्व में रही थी, यदि एक मनुष्य जो चौरासी लाख योनियों के बाद मानव जीवन में प्रवेश करता है तब क्यों वह निराश होकर बैठ जाता है? ईश्वर की सर्वश्रेष्ठ रचना मनुष्य माना गया है फिर क्यों न अपनी कल्पना शक्ति को इतना प्रभावी कर समाज में परिवर्तन की एक कोशिश करें? क्यों नहीं हम हर लक्ष्य को मन से पूर्ण करने का प्रयास करें? हार-जीत जरूर एक ओहदा दिलाता है समाज में, मगर छिछोरे मूवी से आप अच्छे से परिचित होंगे वहां लूज़र वो नहीं होता जो हार जाता है बल्कि वह साबित होता है जो कोशिश ही नहीं करता। इसलिए किये हुए प्रयास का भले ही उस समय परिणाम आपकी सोच के अनुरूप न मिले मगर एक-न-एक दिन वो किसी रूप में हमारे काम जरूर आएगा। व्यर्थ तो कुछ भी नहीं जाया करता, यदि हमारा प्रयास यूं ही व्यर्थ जाने लगा तब मनुष्य जन्म का क्या कारण। "कुछ होता है, हमेशा कुछ होने के ही लिये" यह एक प्रसिद्ध पंक्ति है, जिसका अर्थ है कि हमारे आस-पास बीत रहा हर काम किसी कारण के लिये ही होता है।

साथ ही अगर हम अपने लिये सोचकर परेशान हो रहे हों तब एक बार उस व्यक्ति की कल्पना करें जो उससे भी अधिक दुख का सामना कर रहा हो और वह उन सुख-सुविधाओं की आशा में निराश हो जिनमें हम अभी जीवन व्यतीत कर रहे हैं।

इसलिए कोई मनुष्य निर्बल नहीं होता शारीरिक रूप से यदि वह मानसिक तनाव को दूर करने के लिये निश्चय कर ले।

मैं स्त्री हूं

सिमरन सिंह

मैं उठाऊं क्या हाथों से,
कि, मेरे सपने बड़े ऊंचे हैं!
तुम समझते हो कमजोर मुझे,
मैं खुद में आदि-शक्ति हूं।
मैं काम करूं, ये नाम करूं,
जग-जन-जीवन पर मैं भी मान करूं।
तुम दो लोगों की बातों पर,
मैं क्यों अपना ये ध्यान करूं?

ये जीवन है, ये धरती है,
मैं ब्रह्मा हूं, मैं स्पष्ट हूं।
इस अंतर-द्वंद्व में मत फंसो,
ये साफ है और खास है,
मैं स्त्री हूं!

मैं खुद में अजन्मा जीवन हूं,
जो जग-जीवन को जोड़े हैं,
मैं बहती लौ जलधारा में,
तुम तर्क-वितर्क पर मत जाना!
मैं ठंडी-शीतल गंगा हूं,
और तपती अग्नि का गोला भी,
तुम अहं-वहम् में मत रहना!
जीत हो या हार हो,
मैं हार कर भी जीतती,
मैं युद्ध का रणगीत हूं,
मैं साधना में संघर्ष भी।

मैं प्रेम की हूं प्रियसा,
रणभूमि की वीरांगना,
तुम पूछते मैं कौन हूं?
मैं 'स्त्री' हूं!
मैं 'स्त्री' हूं!

खुशनुमा सफर

सृष्टि नेगी

'समीक्षा परिवार': यह शब्द स्वयं ही बुलंद हौसलों व तर्क की कसौटी पर खरे उतरने का पर्याय है। मेरे लिए समीक्षा अगर प्रेम है तो कर्तव्य भी, जीवन का आनंद है तो जीवन का स्वाद भी । जब व्यक्ति विजयी होता है तो उसे जीवन का समग्र आनंद प्राप्त होता है, परन्तु जब हार को गले लगाता है तो उसे जीवन के स्वाद से परिचित करवाया जाता है ।

कुछ इस तरह बीत रहे दिनों की चर्चा करती हूं
कुछ गोष्ठियों की शामों को रात मे तब्दील करती हूं

जनवरी की एक संध्या को हमारी सोसाइटी का परिणाम आया, जिसमे की मेरा चुनाव किया गया था । समीक्षा के दरवाज़े की देहलीज़ पर डगमगते कदमों को हमारी सीनियर मित्रों ने संभाला। एक साथ चीज़ें ना थोपते हुए उन्होंने वाद-विवाद की एक एक सीढ़ी व पहलु को समझाया।

अवसर कुछ ऐसे प्राप्त हुए जिन्होंने ना सिर्फ जीत की ख़ुशी से परिचित करवाया बल्कि हार को एक अलग व बेहतर दृष्टिकोण से देख सिखाया । इससे पहले कभी खुद को सामाजिक कुरीतियों पर प्रहार करते नहीं पाया और ना ही ज्ञान के समुंदर मे गोता लगाते पाया। मगर अब एक अलग छवि उभरकर बाहर आयी है, जो तर्कों का सम्मान व कुतर्कों का खंडन करना सिखाती है ।

यह अब तक सफल ना था
जब तक समीक्षा दिल मे ना था

इस प्रकार मेरा समीक्षा मे अभी तक का सफर बहुत अच्छा रहा । इसमें कोई शक़ नहीं कि समीक्षा ने मेहनत करना नहीं सिखाया । परिश्रम के साथ साथ जीवन के मूल्योँ से अवगत कराया और आगे भी यह मूल्य मुझे भावनात्मक बंधन मे बांधे रखेंगे ।

एक बेटी की दास्तां

आलिया सैफी

कल माँ से मैं रूठी थी क्योंकि,
उन्होंने कहा था मैं एक बेटी हूँ बेटा नहीं।
माँ मैं ये भेद ना जानती,
क्यों न हूँ मैं लाठी तेरी?
सोचती थी शायद है मुझमें ही कमी कोई,
या था मेरा ही कसूर सभी।
बेटी थी जो मिल जाती है यूहीं,
वरना बेटे के लिए तो होते हैं जाप कई।।

बेटे का जन्म हो तो जश्न का आगाज़,
बेटी का जन्म हो तो ब्रुण की बात,
जहाँ बेटे को माना जाता हो वंश,
वहीं बेटी क्यों नहीं है अपना ही अंश।।
उम्र बढ़ती है तो संभल कर चलने के लिए कह दिया जाता है,
अपनी बातों को दिल तक ही रखने के लिए कह दिया जाता है।
हाँ हूँ मैं लड़की तो क्या हुआ?
मेरी भी कुछ ख्वाहिशें हैं, ख्वाब हैं,
क्यों इस समाज को उस लड़की की पीड़ा समझ नही आती
जबकि वो आगे बढ़कर अपने देश का नाम रोशन करना है चाहती।।

भाई को मिले कामयाबी,
मांगी जाती हैं दुआएँ इतनी,
वहीं बहन हो होनहार कितनी,
फिर भी जिंदगी है चूले चोखे जितनी।।
अगर यह बात मान भी ली जाए,
फिर भी इतनी पाबंदियां क्यों लगा दी जाती हैं।
छोटे कपड़े पेहनूं तो मॉडर्न कहलाती हूँ।
वहीं सूट सलवार पहनूं तो गवार बन जाती हूँ।
ये आखिर केसा समाज है जहाँ,
दिन के उजाले में भी मैं अपने आप को सुरक्षित नहीं महसूस कर पाती।।

पहले बेटी होने का कर्ज़ उतारा,
अब बेटी होने का फर्ज़ निभा रही है।
माँ, तुम्हारी बेटी अपने ख़्वाब छुपा रही है।।
हिस्सा नहीं मैं माँगती,
प्यार वैसा ही चाहती,
मैं फल नहीं तब का सही,
पर अंश हूँ तेरा ही कहीं।।

अगर बेटे की जिम्मेदारी है
नौकरी करना जाकर बाहर,
बेटी का फर्ज़ क्यों है सिर्फ
संवारना घर की चार दीवार।
यही कहानी दोहराती है हर घर।।

बहन का क्यों नहीं है हक हर सुविधा तक
जहाँ भाई को मिलता है बिन मांगे हर हक।
करते हैं दोनों लड़ाई अगर
कैसे बन जाती है बहन समझदार और भाई बेकार।
अगर है बहन इतनी ही समझदार
फिर क्यों किया जाता है उसके दर्जे पर वार।।

अगर भाई करे कोई गलती,
मिल जाती है उसको माफ़ी,
वहीं पर क्यों बहन पर किया जाता है,
समाज की इज्ज़त का बोझ भारी।।

एक लड़की अपने जीवन में,
एक बेटी होती है, एक बहन होती है, एक बहु होती है, एक माँ होती है,
कल हम इसके और रूप देखेंगे,
पर तब तक इस बेटी के लिए,
जो उड़ना चाहती है अपने ख्वाबों को लेकर,
मैं दो पक्तियाँ कहना चाहूँगी।

उड़ना चाहती हूँ मैं भी
अपनी काबिलियत के रंगों को बिखराकर,
मिल जाए मुझे भी प्यार उतना
झूम उठे मेरा दिल खुश होकर।
चंद्र समान सिर्फ रूप नहीं
सूर्य समान प्रकाश रखे,
ऐसी होती हैं बेटियाँ
जिसपर तू भी अभिमान रखे।।

चित्र सौजन्य~ रूशदा

छोटा होना छोटी बात नहीं होती

साक्षी मिश्रा

छोटा होना छोटी बात नहीं होती
चाहे उम्र में हो या हैसियत में
आप छोटे ही होते और
ये अंदाजा लगा लिया जाता है
कि आप ग़लत ही होते हैं
अगर आप उम्र में छोटे है तो
आपको अपना मत रखने का
कोई अधिकार ही नहीं होता है
क्योंकि आपमें अभी समझ ही कहा है
और फिर भी अगर कुछ बोल दिया
तो कितनी बत्तमीज हो गई हैं
अपने से बड़ों की कोई इज्ज़त ही नहीं है
और अगर आप हैसियत में छोटे है तो
आप तो बोलने का हक़ ही नहीं रखते
क्योंकि अब छोटे लोग सलाह देंगे क्या
मैं ये नहीं कहती हर जगह यही होता है
लेकिन ये ज़रूर कहती हूं जहां होता है
वहां छोटा होना सिर्फ छोटा होना नहीं
मतहीन और अस्तित्वहीन होना होता है।
और हां, छोटा होना छोटी बात नहीं होती।

“नए युग का दौर”

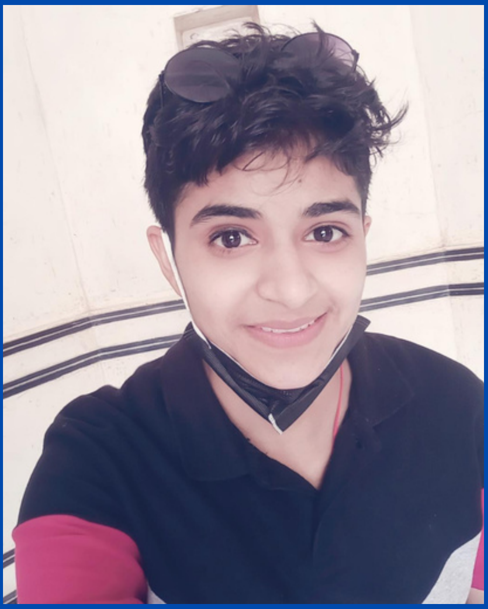

शारदा यादव

चारों ओर है हेरमफेर,
जिंदगी की भाग-दौड़ में भी हो जाती है देर-सवेर,
क्यों है कोलाहल और घरघराहट?
और कैसी है यह भ्रमित-सी घबराहट?
क्या यही है नया जगत का नया युग?
जिसे सभी कहने लगे हैं कलयुग।

हां, माना है ये नए युग का परिवर्तन,
कहीं शोर है, कहीं है धुंओं के बादल,
और बनते बड़े-बड़े ईंटों के जंगल,
हम इस धरती के प्रयोग कर लिए सब संसाधन।

क्या इसलिए होड़ लगी है सब में जाने की मंगल(ग्रह)?
नए खतरे, नई समस्याएं फिर प्रबल हो चुकी है यहां,
क्या हासिल होगा मंगल?
जब बचा ही नहीं पाए हैं हम यह जहां,
कोरोना ने जो दिया सबक हमको,
क्या नहीं लेनी चाहिए, इससे कोई सीख हमको?

प्रकृति के खिलाफ अत्याचारी हम बन बैठे हैं,
कैसे हो गए हैं अब हालात?
क्या यही नया युग है?
जिसकी हम कर रहे हैं बात।

ऊंच-नीच का भेदभाव भी आज कितना नाजायज है,
वर्गों के वर्चस्व से टुकड़ों-टुकड़ों में बंट चुका है हमारा समाज।
गीता, कुरान, रामायण, महाभारत जाने कितने पवित्र ग्रंथ यहां,
फिर भी कुदृष्टि व अत्याचारों से मुक्त ना हो सका यह जहां।

सभ्य समाज का सभ्य दर्पण,
घिरा हुआ है धुंधली परछाइयों से,
सभ्यता का मानक देखो,
मजबूत जड़ें भी हिल चुकी है बहुत ही गहराइयों से,
क्यों आज सब का यह हाल है?
क्या यही नया परिवर्तन का युग है?
जिसे सभी कहने लगे हैं कलयुग।।

कोरोना काल में समीक्षा का अनुभव....

अन्वेषा डे

कोविड 19 के कहर से आज विश्व का कोई भी देश या कोई भी कोना अछूता नहीं रहा है और इसी संदर्भ में गार्गी महाविद्यालय की हिंदी वाद विवाद समिति-समीक्षा ने भी अपना कार्यकाल ऑनलाइन माध्यम से बखूबी जारी रखा एवं अपने नवागंतुक सदस्यों को भी वही कला सिखाने की कोशिश की जो सामान्य स्थिति में भौतिक रूप से सिखाया जाता है।

समीक्षा हिंदी वाद विवाद समिति की नई सदस्या होने के नाते मुझे वाद विवाद की सभी कलाएं सीखने का स्वर्णिम अवसर मिला और पुराने सदस्यों का भी पूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ।

कोरोना काल के इन विकट परिस्थितियों में भी जिस प्रकार से प्रैक्टिस सेशन के माध्यम से विभिन्न तार्किक अनुष्ठानों में भाग लेने हेतु हमें प्रशिक्षित किया गया वह अत्यंत ही सराहनीय है।

समीक्षा अपने सदस्यों को बहुभाषीय वाद विवाद करने के लिए प्रोत्साहित करती है और अपने सदस्यों को बहुआयामी प्रशिक्षण देते हुए बहुमुखी प्रतिभा की धनी बनाती है।

समीक्षा से मिली सभी अनुभवों की मैं सदा आभारी रहूंगी और समीक्षा की सभी यादें मेरे लिए सदा यादगार रहूंगी।

समीक्षा में अनुभव

शारदा यादव

बहरहाल, समीक्षा परिवार में अनुभव की बात करें तो ढेर सारे हैं और हो भी क्यों ना परिवार जो है हमारा। जब से समीक्षा परिवार से जुड़े हैं कुछ यादें, कुछ लम्हें ऐसे भी हैं जो कभी भुलाए नहीं जा सकते। समीक्षा परिवार से जुड़ना ही अपने आप में एक सुखद अनुभव है। समीक्षा के प्रत्येक सदस्य में वह सर्वश्रेष्ठ एवं रोचक क्षमता है जो आपको कभी उबाऊ महसूस नहीं होने देती। समीक्षा से मैंने बहुत अच्छी बातें और चीजें सीखी हैं जिसमें एक कुशल डिबेटर बनना भी मुख्य रहा है। डिबेटर के साथ-साथ कौशल को निखारना भी समीक्षा परिवार हमें सिखाता है। जब शुरू-शुरू में समीक्षा परिवार से मैं जुड़ी तो मुझे दीपांशी दीदी (बतौर अध्यक्षा), छाया दीदी, वर्षा दीदी, शिवानी दीदी, खुशबू(बतौर उपाध्यक्षा) इन सब से रूबरू होने का अवसर प्राप्त हुआ साथ ही इनके प्यार ने हमें हमेशा एक परिवार जैसा माहौल दिया। जैसा कि मैंने पहले ही कहा समीक्षा मेरे लिए एक समिति से बढ़कर एक परिवार है।

अतः इसके प्रत्येक सदस्य भी एक-दूसरे के साथ समन्वित और सहयोग की भावना के साथ काम करते हैं। समीक्षा ना केवल आपको वाद-विवाद के विभिन्न आयामों से रूबरू करवाता है; साथ ही आप के समग्र विकास को भी विकसित करता है। कोरोना ने जिस तरह से हम सब को एक-दूसरे से अलग कर दिया है, परंतु फिर भी हम वर्चुअली ही सब साझा करते हैं। समीक्षा में सबसे ज्यादा मुझे अगर द्वितीय वर्ष में प्यार मिला तो वे दीपांशी दी और छाया दी है जिन्होंने हमें हमेशा अपनी छोटी बहन की तरह प्यार दिया और बहुत-सी अच्छी चीजें सिखाईं जो आज भी उतनी ही प्रासंगिक है।

यद्यपि, वर्तमान समय की मैं बात करूं तो कोरोना के समय भी खुशबू (बतौर वर्तमान अध्यक्षा) समीक्षा को नई ऊंचाइयों की ओर अग्रसर कर रही है। उनकी मेहनत, उनका जज्बा और समीक्षा के प्रत्येक सदस्य के प्रति उनका प्यार अनकहा है। इस परिवार में मेरे प्यारे जूनियर्स जिनमें हेमांगी, सीता, ईशा, संजीवनी, अनुभूति सभी बहुत ही प्यारे-प्यारे और अच्छे हैं। विश्वास है कि समीक्षा ऐसे ही ऊंचाइयों की ओर अग्रसर रहेगी और एक नया आयाम स्थापित करेगी। आशा है आप सब समीक्षा परिवार के नए सदस्यों से भी रूबरू होने का अवसर जल्द ही प्राप्त होगा। मेरी ओर से समीक्षा परिवार के सभी सदस्यों को ढेर सारा प्यार और शुभकामनाएं!

महिलाओं के खिलाफ हिंसा से आज़ादी

मीनाक्षी उपाध्याय

किसी भी सभ्य समाज की वास्तविक स्थिति जानने का एक तरीका यह है कि हम यह जाने कि उस समाज में महिलाओं की स्थिति कैसी है, उनको क्या-क्या अधिकार प्राप्त है अर्थात शैक्षिक स्थिति कैसी है? जिन्होंने सदैव समाज अर्थात परिवार की मूलभूत जरूरतों का ख्याल रखा उनकी मूलभूत संसाधनों तक कितनी पहुंच है| प्राचीन भारत में महिलाओं के साथ पुरुषों की अपेक्षा किसी प्रकार का भेदभाव नहीं देखा गया था अर्थात उन्हें भी पुरुषों के बराबर ही माना जाता था| भेदभाव अर्थात अत्याचार का आवागमन मध्ययुगीन काल से आरंभ हुआ|

महिलाओं के प्रति भेदभाव समाप्ति हेतु सर्वप्रथम प्रयास 19वीं से 20वीं शताब्दी में आरंभ हुआ| जब अनेक राजनीति और सामाजिक विचारकों ने वैयक्तिक स्वतंत्रता से संबंधित विचारों का समर्थन किया। भारत की आजादी से लेकर संविधान के निर्माण तक व उसके क्रियान्वयन में सावित्रीबाई फुले, बीकाजी कामा, रानी लक्ष्मीबाई, राजकुमारी अमृत कौर, दुर्गाबाई देशमुख आदि महिलाओं का महत्वपूर्ण योगदान रहा|

परिवार (समाज की सबसे छोटी इकाई) जिससे समाज का निर्माण होता है, भेदभाव भी वहीं से शुरू होता है| इसके पीछे मानसिकता की बहुत महत्वपूर्ण भूमिका होती है। व्यक्ति की मानसिकता इतनी तुच्छ हो गई है कि आज उसने महिलाओं के विकास और स्वतंत्रता दोनों को प्रतिबंधित कर दिया है। विवेकानंद जी ने कहा था- नारियां महाकाली की साकार प्रतिमाएं है| यदि इन्हें नहीं उठाया गया तो उन्नति का कोई और रास्ता नहीं है| जो जाति इनको सम्मान नहीं दे सकती, वह न तो बीते समय में उन्नति कर सकता है और ना ही भविष्य में| लेकिन शायद आज हमारी बेटी, बहन निर्भया हो या प्रियंका, लक्ष्मी हो या आसिफा जब अत्याचार का सामना करते हैं, तो ऐसी स्थिति में देश को विकास की ऊंचाइयों तक पहुंचाना मात्र एक कल्पना है| हम भले ही आज तकनीकी क्षेत्र में आगे बढ़ रहे हैं लेकिन समाज पूर्ण रूप से तब तक विकसित नहीं हो पाएगा जब तक महिलाओं का आदर व सम्मान हमारे समाज द्वारा नहीं किया जाएगा| भारत जैसे देश में, हमने स्त्रियों को आगे बढ़ने के लिए कभी प्रोत्साहित नहीं किया| उन्हें चारदीवारी के अंदर ही रखा लेकिन हमें समझने की आवश्यकता है कि नारी कोई कच्चे आम का फल नहीं जिसे एक कोने में दबाकर रखने से वह परिपक्व हो जाएंगी, वे तभी परिपक्व होंगी जब उन्हें बाहर की दुनिया का ज्ञान होगा, वे तभी आगे बढ़ेंगी, जब वे समाज के लोगों से परिचित होंगी| यह हास्यप्रद है कि हम महिलाओं को चारदीवारी में रखकर समाज का विकास कैसे कर सकते हैं?

समाधान

समाज में असमानता को समाप्त करने के लिए मात्र सरकार को ही दोष देना उचित नहीं है क्योंकि कोई भी परिवर्तन समाज द्वारा किए गए क्रियाकलापों के कारण ही आता है तो सबसे पहले हमारे समाज जिसमें हमारा परिवार है, परिवर्तित होने की आवश्यकता है|

- मानवता- इसका समाधान सरकार द्वारा उठाए गए कदम अर्थात कानून व्यवस्था से ज्यादा मानवता द्वारा मानवता की अवधारणा को अपनाने से है। जब तक हम अपनी विचारधारा को नहीं बदलेंगे तब तक इस समस्या का समाधान नहीं मिल सकता|
- शिक्षा- शिक्षा के अभाव से असमानता और अधिक तेजी से बढ़ रही है| जितनी अधिक शिक्षा प्राप्त हो सके उतना अधिक प्राप्त करना चाहिए अर्थात बच्चों की शिक्षा के लिए माता-पिता को अधिक ध्यान देना चाहिए। शिक्षा मात्र किताबी ना हो बल्कि नैतिक शिक्षा का समावेश होना भी उतना ही जरूरी है, यदि माता-पिता द्वारा अपने बेटे को समानता का महत्व बताया जाए तो हो सकता है, भविष्य में होने वाली उसकी जीवनसाथी को असमानता का शिकार न होना पड़े, नैतिक शिक्षा से हम सही या गलत अर्थात उसके परिणामों का आकलन कर भविष्य की राह प्रशस्त करने में सक्षम होते है|
- परिवार- हमने सदैव पुरुषों (पुत्रों) पर कभी रोक-टोक अर्थात कोई सीमा नहीं लगाई और महिला (पुत्री) के लिए समय की पाबंदी व अनेक सीमाएं लगा रखी है। आज आवश्यकता है कि समान रूप से सीमाएं हो। यदि माता-पिता अपने पुत्रों को एक अच्छी व व्यवस्थित दिनचर्या सिखाएंगे तो शायद महिलाओं को कहीं आने जाने से भय कम होगा| परिणामस्वरूप वे भी आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ेंगे|
- कानून और व्यवस्था- हिंसा व अराजकता को समाप्त करने के लिए मात्र कानून व्यवस्था का होना ही नहीं बल्कि उसे कितने तत्काल अर्थात जल्द से जल्द इंसाफ मिलना आदि भी सुनिश्चित करना उतना ही आवश्यक है| 2012 में महिला (निर्भया) को उनके शोषण का इंसाफ सात साल बाद मिला| इस प्रकार कार्यवाही की अवधि जल्दी होनीं चाहिए। सरकार की जिम्मेदारी होनी चाहिए कि वह सुनिश्चित करें कि कानून व्यवस्था का कड़ाई से पालन हो व किसी भी प्रकार का भ्रष्टाचार ना हो|
- आत्मविश्वास- समसामयिक समय में महिलाओं के लिए आवश्यक है कि वे अपनी शक्ति का आत्मबोध करें। स्वयं को कमजोर ना समझे। अधिकतर महिलाएं समाज द्वारा चयनित की गई अवधारणाओं को अपनाने लगी है। वे स्वयं को शारीरिक व भावनात्मक रूप से कमजोर समझने लगती है। इस प्रकार इन समस्त बातों पर ध्यान न देकर स्वयं में ऊर्जा का संचालन करें तथा स्वयं की रुचि को पहचान कर आगे बढ़े ताकि आगे आने वाली पीढ़ी को भी शिक्षित और मजबूत बना सके तथा उनको किसी भी प्रकार की असमानता का सामना न करना पड़े| महिलाओं को सदैव हर क्षेत्र में अपनी भागीदारी सुनिश्चित करने का सदैव प्रयास करना चाहिए|

वो इक मासूम सी लड़की

संजीवनी खन्ना

आज वो भी चल सकती इन सड़को पर निडर हो कर,
अगर इन बेईमान इरादों ने उसे यू जकड़ा ना होता।
आज वो भी हँस सकती खिलखिलाकर,
अगर इन बेईमान इरादों ने उसके होंठों को यूँ सिला ना होता
आज वो ना देखती हर मर्द में हैवान, अगर इन बेईमान इरादों ने उसे यूँ घूरा ना होता ।
आज वो भी देखती दुनिया बेखौफ होकर,
अगर इन बेईमान इरादों ने उसे यूँ छुआ ना होता।
आज उसके माँ बाप भी सो सकते सुकून से,
अगर इन बेईमान इरादों ने उन्हे रुलाया ना होता।
आज वो भी पहन सकती जो उसे पसंद है,
अगर इन बेईमान इरादों ने उसे यूँ खेलने की गुड़िया ना समझा होता।
आज वो भी करती महफ़ूज़ महसूस, अगर इन बेईमान इरादों ने उसे यूँ पकड़ा ना होता, रौंदा ना होता, यू पीटा ना होता।

ये बेईमान इरादे सिर्फ उन लोगों के नहीं है, जिन्होंने उस लड़की को रुलाया है, यह बेमान इरादे उस समाज के भी है, जिसने उस लड़की को बेगुनाह होते हुए भी गुनहगार बना दिया।।

समीक्षा परिवार और यादें (अनुभव)

सीता प्रजापति

समीक्षा: हिंदी वाद-विवाद समिति, गार्गी महाविद्यालय की सदस्या बनकर जो आंनद की अनुभूति हुई थी वो बरकरार रखने में अब थोड़ा डर लग रहा था? Covid-19 ने अपने अस्तित्व को स्थापित कर हमें कॉलेज व सोसायटी से दूर कर दिया था। एक ऐसी स्थिति जहां सब अपने घर में बंद, अपनी सुरक्षा के लिए बस सरकारी नियमों का पालन कर रहे थे। इसी बीच हमारी नई यूनियन बनी। हमने जाना यूनियन के चुनाव किस प्रकार होते हैं, और ना जाने कितना कुछ सीखा। चूंकि सभी कार्य ऑनलाइन हो रहे थे तो ज़ाहिर सी बात है अब सोसायटी मीटिंग्स, वाद-विवाद, प्रैक्टिस सेशन आदि या तो ज़ूम या गूगल मीट पर स्थानांतरित हो गए थे, जो सेशन कभी विद्या दीदी के प्यार से गले लगाना, मीनाक्षी दीदी को बोलना 'आप सीनियर नहीं लगते', शारदा दीदी की केयर, आलिया दीदी की क्यूटनेस और ईशा, बबली, हेमांगी और अनुभूति के साथ की मस्ती से होते थे।

मितिक्षा की प्यारी-प्यारी सलाह, खुशबू दीदी का ढेर सारा ज्ञान, और दीपांशी दीदी की प्यारी सी मुस्कान, बहुत याद आती है कॉलेज की। एक ऐसा अनुभव जहां लगता नहीं कि हम अजनबी हैं, एक ऐसा परिवार जहां सबसे ढेर सारी बातें करना और करते ही जाना लगा रहता हैं ।

अब नया सेशन शुरू हो चुका है, नए लोग भी सोसायटी का और इस प्यारे से परिवार का हिस्सा बन चुके हैं, सबसे मिलकर बस ऐसा लगता है की जो तर्क हम यहां किसी को देखे बिना दे रहे हैं वो काश इनसे मिलकर देते। यूं तो सभी नए सदस्य बहुत अच्छे हैं, लेकिन एक और अच्छी बात यह हुई कि अब हम सीनियर्स भी बन गए हैं, सृष्टि और हिमांशी के रोज़-रोज़ के प्रश्न मुझे उस दौर में ले जाते हैं जब मैं दीपांशी दीदी से ऐसे सवाल पूछा करती थी । खुशबू दीदी का ढेर सारा प्यार, उनका इतने प्यार से हमें बाबू बोलना, नई चीज़ों को बहुत आसान तरीके से सिखाना,और हमारे लिए हर वक्त अपना समय देना, हमें एहसास कराता है की हम सिर्फ नाम के लिए नहीं बल्कि सच में एक परिवार हैं।

हमारा अन्वेषण, गूंज सभी कार्यक्रम जिस सफलता से पूरे हुए हमें दीदी से पार्टी लेना बनता हैं, लेकिन यहां फिर बात वही आ जाती है, कॉलेज नहीं खुल रहे। ऐसा नहीं कहती की ये अनुभव अच्छा नहीं रहा, सभी चीज़ें ऑनलाइन के बावजूद, जो दौर हमने एक माला बनकर बिताया वो एक परमानंद की अनुभूति थी ।

बहुत सारी नई चीज़ें सीखी, नया अनुभव रहा, और इसी के साथ एक और साल इस प्यारे से परिवार के साथ कैसे निकल गया पता ही नहीं चला।

ये वक्त ठहर जा ज़रा, इन लम्हों को यादों में संजोने दे
मुझे कुछ अपनों के साथ,
ज़रा लम्हें-दो-लम्हें और बिताने दे।

आस्था बनाम तर्क

सौम्या

आस्था वह विश्वास है जो किसी भी देश, परिस्थिति, काल, संदर्भ का मोहताज नहीं होता।
आस्था हमे विरासत के रूप में हमारे पूर्वजों द्वारा प्राप्त पीढ़ी दर पीढ़ी के अनुभवों और ज्ञान का समन्वय है। आस्था पदसोपान में तर्क से ऊपर है क्योंकि एक ओर जहां तर्क व्यक्तिपरक होता है, आस्था सामाजिक पूंजी है और चूंकि मनुष्य सामाजिक प्राणी है, समाज व्यक्ति से बड़ा है।

आस्था गतिशील न होकर अडिग है। अडिग विश्वास मनुष्य की सोच के साथ साथ व्यक्तित्व को भी आकार देता है। उदाहरण स्वरूप यदि देखे तो जैसे मैं लोकतंत्र में आस्था रखती हूं, और इसी कारण मेरा विश्वास उस पर अडिग है, फलस्वरूप मैं लोकतंत्र को मजबूत करने में कार्यरत रहूंगी।

आस्था और आत्मा एक दूसरे के पूरक है। दोनो ही शाश्वत है जो कभी समाप्त नही होंगे। वही तर्क भौतिक दुनिया से उपजा माया का प्रतीक है जो नश्वर और जिसका अंत निश्चित है।

तर्क को आगे बढ़ाने के लिए आस्था ही जरूरी है। आस्था व्यक्तित्व को नियंत्रित कर मार्ग प्रशस्त करती है। उदाहरण के तौर पर देखा जाए तो यूरोपीय पुनर्जागरण काल (Renaissance) तर्क के उद्भव के लिए जाना जाता है। परंतु renaissance की पृष्ठभूमि में, वैज्ञानिकों, लेखकों, चित्रकारों द्वारा उनके कार्य, आविष्कारों के प्रति उनकी आस्था ने ही तर्क का उद्भव कर उसका विकास किया।
आस्था हमारे जीवन में शांतिमय स्थिरता लाती है। इससे हमारा मन शांत, स्थिर, धैर्यपूर्ण होता है। उदाहरण स्वरूप देखे: विपरीत परिस्थितियों में आस्थावान व्यक्ति और तर्कपूर्ण व्यक्ति की स्थितियां भिन्न होती है। अपने प्रियजन की मृत्यु के पश्चात, आर्थिक तंगी जैसी दुखद परिस्थितियों में आस्थावान स्थिर रह, प्रकृति का परम सत्य मानते हुए दुख तकलीफ से निजात पा लेता है। क्योंकि तर्क सवाल जवाब का खेल है , तर्क करने वाला व्यक्ति ऐसी स्थिति में विचलित हो जाता है और सिर्फ इसी सवाल से जूझता रहता कि आखिर मेरे साथ ऐसा कैसे और क्यों हुआ। इस प्रकार एक विपरीत परिस्थिति उसके तर्को को अस्तित्वहीन कर उसके मन, चित्त को तनावग्रस्त कर देती। वह तर्को के साए में उलझा रह अपनी शांति, सहनशीलता, धैर्य, प्रेम सब कुछ धीरे धीरे खोने लगता।
आस्था निस्वार्थ भाव का प्रतीक है वही तर्क की नीव स्वार्थ पर ही टिकी हुई है। उदाहरण के रूप में इस बात को समझते है : वृक्ष संरक्षण के लिए जागरूकता फैलाने में आस्था और तर्क का अपना अपना तरीका है। आस्था कहती है व्रक्षो के अंदर भी जीव है, ये ईश्वर के ही रूप है अतः इनको काटने से बचाना हमारा धर्म, दायित्व है। यहां आस्था के इस मार्ग पर चलने के लिए व्यक्ति के सामने कोई शर्त नहीं रखी गई है, उसका स्वार्थ नही दर्शाया गया है। वही दूसरी ओर तर्क हमे हमारा स्वार्थ दिखाते हुए हमे वृक्ष संरक्षण के प्रति जागरूक करता है कि यदि हम वन संरक्षण करेंगे, तभी लंबे समय तक जीवित रह पाएंगे।
यदि आस्था का स्थान तर्क से ऊपर ना होता तो शायद तर्क का कभी उद्भव ही न होता क्योंकि तर्क को आगे बढ़ाने में आस्था ही सहायक है। आस्था हमारे ऐतिहासिक विचारो का संकलन है जिसकी महत्ता कभी समाप्त नही हो सकती चाहे समाज कितना भी विकसित और तार्किक क्यों ना हो जाए। आस्था ना होती तो मां बाप , भाई बहन के पवित्र रिश्ते जो आस्था की नीव पर टिके है तमाम तमाम तर्को की सूली चढ़ चुके होते।

पहला नम्बर

खुशबू

31 मार्च 2012 इस दिन कुछ खास नहीं था फिर भी सब कुछ खास था, सब कुछ अलग था लेकिन फिर भी एक समानता थी। सोच सकते है क्या थी वो समानता?तो समानता थी आज की तारीख़ और इस दिन लोगों के दिल में उठती बेचैनी की लहर। बच्चे डरे हुए थे कि आखिर आज उनके परीक्षा के परिणाम में क्या होने वाला है? बड़े डरे हुए थे कि आखिर आज जब पुराना वित्तीय वर्ष खत्म हो चुका है तो नया वित्तीय वर्ष कौन सी मुसीबत लाएगा? असल में सब अपनी किस्मत में क्या लिखा है और क्या होने वाला है इसी चिंता से परेशान थे।

सुबह के 9 बजे थे और 10 बजे विद्यालय में अंजु मैडम ने आने को कहा था क्योंकि आज आना था छठी कक्षा के वार्षिक इम्तिहान का परिणाम। महक अभी भी बिस्तर में अपने परिणाम के सपने सजाए सो रही थी की अचानक किचन से आवाज आई "उठ जा महारानी स्कूल नहीं जाना क्या, जितना सोना है सो ले एक बार नंबर पता चलने दे सारी मस्ती निकलती हूं फिर मैं तेरी" बस फिर क्या था जैसे ही ये आवाज़ महक के कानो में गई उसकी नींद ही उड़ गई और आंख यूं खुली मानो किसी ने तेज रोशनी आखों में मार दी हो लेकिन ये अनकहा डर मम्मी की बातों का नही था, ये डर था पापा का,ये वही डर था जो बचपन से महक के बचपने और स्कूल सिलेबस का साथी रहा था।

ये डर था पापा द्वारा तय की गई अनिवार्यता का।जी हां! महक को अभी बीती बाते सब याद आ रही थी जब पांचवी कक्षा में द्वितीय स्थान प्राप्त करने पर उसके पापा ने उसे अगली परीक्षा तक कमरे की चार दिवारी में कैद कर दिया था और खाने पीने से लेकर सोने सबका समय तय कर दिया था। महक को याद है उसने पिछले दो साल कोई टीवी शो नही देखा था। बस इसी डर ने अचानक महक को अंदर से हिला दिया और उसकी नींद भी इस डर से डरकर भाग गई।
कुछ दस से बारह मिनट हुए थे और महक समय से बहुत पहले ही तैयार हो चुकी थी और अब समय था उस परिणाम को जानने का जिसके लिए पिछले साल से दिन रात मेहनत करी थी।
लगभग पौने दस बजे थे , महक एक दम उम्मीद भरी आंखों और डर से कापते अपने पैरों को स्कूल के प्रांगण में रखती है। माहौल बहुत रंगीला था सब बच्चे घर के कपड़ों में उछल रहे थे हालाकि डर सभी के मन में एक जैसा ही था। इतने में सामने से साक्षी,महक की पक्की सहेली सामने से आती है और कहती है~ "महक हैड मैम न डिबेट में फर्स्ट आने वाले बच्चों को बड़ी सी फिल्टर वाली नीली बॉटल देंगी , देख न वो रखी है कितनी सुंदर है तुझे भी तो मिलेगी"महक घमंड वाली मंद मंद मुस्कुराते हुए अपने पापा की ओर शाबाशी की आस लगाए टुकुर टुकुर देखती है लेकिन उसके पापा ने मानो सुना ही नहीं जो अभी अभी साक्षी ने बताया। इन्ही सबके बीच में माइक से तेज आवाज आती है की सब बच्चे बैठ जाए अब परिणामों और पुरुस्कारों की घोषणा होने वाली है। महक अपने पापा का हाथ पकड़े उचक कर आगे वाली लाइन में किनारे की कुर्सी पर बैठ जाती है ताकि जब उसका नाम लिया जाए तो आसानी से जा सके। एक एक करके सभी का नाम आ रहा था और अब बारी थी छठी कक्षा के परिणामों की हाथ जोड़ आंख बन्द किए महक बहुत बेसब्री से अपने नाम सुनने का इंतजार कर रही थी इतने में सामने से "मनीष"नाम की घोषणा होती है और दूसरे स्थान पर महक का नाम आता है। महक डरी तो थी ही की अब पापा क्या करेंगे की अचानक हैड मैम महक के नाम एक और पुरूस्कार की घोषणा करती है वो पुरूस्कार था "सर्वश्रेष्ठ वक्ता(जूनियर)" साथ ही महक की तारीफ़ करते हुए मैम उसे मंच पर अपने पिता के साथ आने को आमंत्रित करती है, महक का मासूम दिल डर को छोड़ तालियों की गड़गड़ाहट में खुद को रोक नहीं पाता और अगले ही पल महक मंच पर पहुंच जाती है, लेकिन ये क्या अचानक जब महक का ध्यान अपने बगल में जाता है तो वहां उसके पापा नही है, सामने की कुर्सी पर भी नही बैठे है।

उदास मन से महक धीरे से मेम को अपने पापा के लिए माइक पर घोषणा करती है लेकिन तभी भी उसके पापा नही आते है। मेम जल्दबाजी में पुरूस्कार और प्रमाण पत्र महक के हाथ में पकड़ाते हुए उसे नीचे जाकर अपने पापा का इंतज़ार करने के लिए बोलती है। महक स्कूल में घूमती है उम्मीद भरी आखों में आसूं लिए कि अब उसके पापा आकर उसको गले से लगा लेंगे लेकिन ऐसा नहीं हुआ क्योंकि उसके पापा जा चुके थे उसे स्कूल में अकेला छोड़कर....

किसी तरह महक जब घर आती है तो उसका ये दु:ख और बढ़ जाता है जब शाबाशी देने की बजाए उसे वार्षिक परीक्षा में दूसरा नंबर लाने पर ना सिर्फ डांट पड़ती है, सजा मिलती है बल्कि उसे एक टैग दे दिया जाता है " यू आर गुड फॉर नथिंग"
और इस एक मासूम बच्ची के मन मस्तिष्क में डर की स्याही से जीत और पहले नंबर की भूख लिख दिया जाता हैं साथ ही ये बात बिठा दी गई की हार कितनी बड़ी गलती है और वो कभी हार नही सकती है।

एक माता या पिता के तौर पर हमारी जिम्मेदारी ये होनी चाहिए कि वो अपने बच्चे की हर जीत, हर काबिलियत को सराहे, शाबाशी दे ताकि उनका बच्चा ना केवल मेधावी छात्र/छात्रा बने बल्कि जीवन की रेस में गिरना , संभलना और उठकर फिर भागना सीखे और इस तरह हार हो या जीत दोनों को सहर्ष स्वीकार करते हुए एक बेहतर इंसान बने।

संपादक मंडल

मीनाक्षी उपाध्याय

ईशा अग्रवाल

मितिक्षा गुप्ता

रुशदा

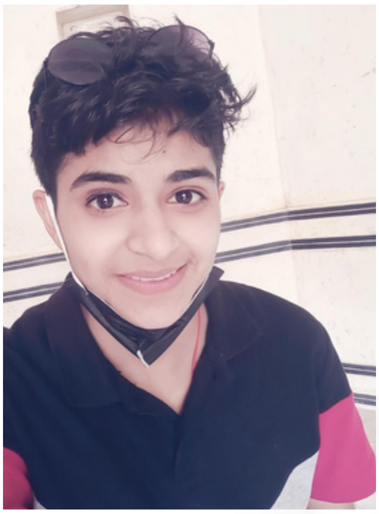

शारदा यादव

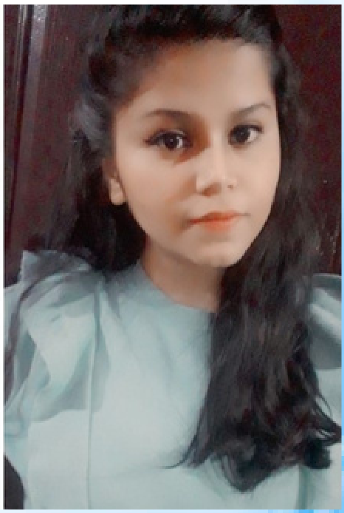

खुशबू

विशेष क्रेडिट

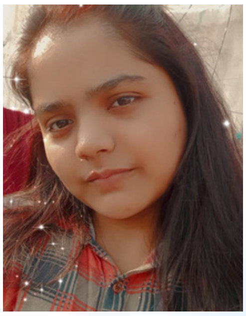

रुशदा (बॉर्डर)

अंजू राय(पत्रिका कवर)

खुशबू (पत्रिका डिजाइन)